

* श्रीविदेहजायै नमः *

अनन्त श्रीविभूषित महाराज श्रीविदेहजाशरण जू कृत

❀ होलिका-रस-विनोद ❀

❀ पदावली ❀



प्रकाशिका —

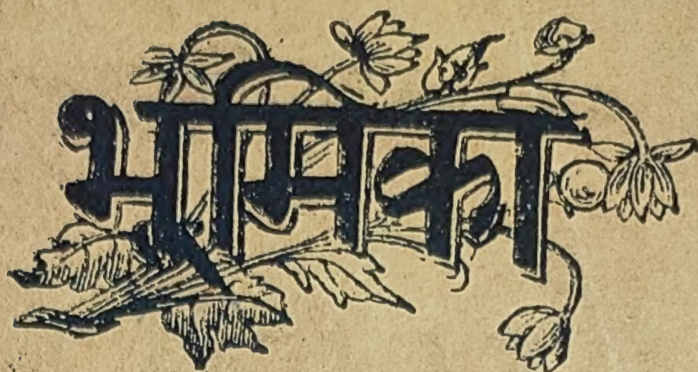
श्रीमती महेन्द्रवतीदेवी उपनाम

श्रीजानकी सहचरी

निवासस्थान बडोवाग-गया ।

प्रथमावृत्ति ५००)

❀ श्रीविदेहजायै नमः ❀



पूजनीय महानुभाव !

अतएव पाठक वृन्द प्रस्तुत पुस्तक में काव्य का अलंकार प्रकार अन्वेषण न करके केवल श्रीयुगलकिशोर जू का परम एकान्तिक क्रीड़ा जो कि गुरुदेव जू के वाणी के द्वारा प्रगट हुआ संप्रह की गई है । यह केवल रसिक जन एवं उनके अनुयाई वर्गों का ही उपभोग अतएव ध्येय गेय पदार्थ है अनोचित दृष्टाओं से छमा प्रार्थी—

संसोधक—

श्रीमहावीरदासजी संगीतरत्न }

विनीत—

रामप्यारी शरण

❀ श्रीविदेहजायै नमः ❀



सोरठा-वन्दौ गुरु परमेश, जिनकी महिमा कां कहे ।

थके गणेश महेश, शारद शेष रमेश युत ॥

❀ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❀

❀ अथ ❀

❀ होलिका रस विनोद पदावली ❀

❀ प्रारम्भ ❀

❀ पद १ ❀

सषि आयो बसन्त सुखेलु फाग ।

अनुराग उमग उर मदन जाग ॥

सिय बाग सोहाग आलिन मनाय ।

सब गावलि साज मिलाय राग ॥

रँग रारि मची भलि सेन साजि ।

मिलि द्वन्द करै कहि धन्य भाग ॥

किये पीत सिंगार सु दम्पति हैं ।

सिर लसत चन्द्रिका नवल पाग ॥

श्री प्रेमलता रितुराज पूजि ।

हिय मंजु मनोरथ बढन लाग ॥

❀ पद २ ❀

अलि खेलै बसन्त सु भरि उमँग ।

पिय प्यारी के संग नवल रंग ॥

किये पीत सिंगार सु ओर दुहूँ ।

हिय उमगि बढ़ावै मदन जंग ॥

रस गान करै नवरंग भरी ।

धुनि छाये रही बाजै मृदंग ॥

दुहुं ओर खड़े बरजोर करै ।

जय हेतु लपटि गये परसि अंग ॥

दोउ अंग सुरंगन भीजि गये ।

छवि हरित रंग इक भइ अभंग ॥

अलि सेज किये रचि समर भूमि ।

दोउ संग बिराजै सजि अनंग ॥

श्री प्रेमलता अलि जीत चाह ।

सिय विजय निहारत श्याम दंग ॥

❀ पद ३ ❀

रितुराज आज सखि आयो ।

हिय भाव सरस सुष छायो ॥

चौक बसन्त बसन्ती रंग मय साज नवल सजवायो ।

फरम वितान खँभ मेहराफै बन्दन माल झुलायो ॥ १ ॥

कुन्डी भाड़ लटू बहु डालै मणिमय दीप बरायो ।

चहुँ ओर फुलगमले साजे इतर गुलाब सिचायो ॥ २ ॥

मध्य सिंहासन पर दोउ राजत बहुरति काम लजायो ।

सेवा सौज सजे बहु बाला गावति साज वजायो ॥ ३ ॥
 अबिर गुलाल परस्पर लै लै खेल वसंत रचायो ।
 श्रीप्रेममोद रस राज विभव यह रसिकन हिय दरसायो ॥ ४ ॥

❀ पद ४ ❀

रँगौले सिय संग खेलै वसंत ॥
 कनक महल के मध्य मनोहर रसमय देस एकंत ।
 लोभि रहेउ रितुराज जहाँ नित मधुकर रव सुकरंत ॥ १ ॥
 नवल सिंगार किये पिय प्यारी पीत सुकुंज लसंत ।
 दुहुं दिसि सौज सजे अलि त्रैवय सोहै यूथ अनन्त ॥ २ ॥
 बाजत साज गान करि नटहीं जय जय सव्द भनन्त ।
 श्रीप्रेममोद भरि छवि अबलोकहि भाविक जन रसवंत ॥ ३ ॥

❀ पद ५ ❀

माघ पंचमी मदन जयन्ती रितुपति खेल सजाई ।
 कनकभवन मनिकुञ्ज मनोहर नवल वितानतनाई ॥ १ ॥
 ध्वज पताक रंभावलि तोरण भालरि ललित लगाई ।
 केशरि कुमकुम अतर अरगजा कलश दीप धरवाई ॥ २ ॥
 दधि दुर्वा फल फूल जवाँकुर अम्ब बौर दरसाई ।
 सिय पिय अलिनि सहित रस भीजे खेलत फाग सोहाई ॥
 बीण मृदंग मधुर धुनि बाजत गान तान रह छाई ।
 नृतत नवल नटी पट फरकत भाव सुकलन देखाई ॥ ४ ॥

वर्षत सुमनदेव ब्रह्मादिक चढ़ि सुबिमाननि आई ।

श्री प्रेम मोद यह छवि अवलोकत सहज स्वरूप समाई ॥५॥

❀ पद ६ ❀

आज जयन्ती मदन वीर को सषि रितुराज सुहायो ।

श्रीरमराज भवन पिय प्यारी उत्सव साजु सजायो ॥

कनक कलश दधि दूव जवाँकुर फल सुफूल मन भायो ।

तुलसी दल श्री केशरि चन्दन अतर सुगन्ध पिचायो ॥

चौकें दीप माल बन्दन नव अम्ब बउर छवि छायो ।

अविर गुलाल सुमन रज कुम कुम पिचकन रंग भरायो ॥

पीत सिंगार अलिन युत दम्पति भूषण भव्य नव्य सरसायो

रागिनी राग नटनि बहु विधि सो तालन साज बजायो ।

श्रीप्रेम मोद रस केलि उमगउर अपने भाग मनायो ॥४॥

❀ पद ७ ❀

होरी खेलन आई सिया स्वामिनि ।

नवल सिंगार किये नख शिष लो ।

प्राण नाथ को अभिरामिनि ॥

संग अली गण गावत आवैं ।

कोकिल बैनी गज गामिनि ॥ २ ॥

मृग लोचनि सब सुभग सयानी ।

लषि दुति लाजहि बहु दामिनि ॥३॥

श्रीप्रेमलता तत सुष रसमाती ।

जात न जानहिं निसि जामिनि ॥४॥

❀ पद ८ ❀

आजु सिय होरी खेलन आवैं ॥

करि सिंगार महल से निकसीं ।

सखिन मध्य छवि छावैं ॥ १ ॥

बरनि न जाय अलौकिक सोभा ।

प्रीतम के मन भावैं ॥ २ ॥

बाजत साज गान अलि करहीं ।

भूषण धुनि सरसावैं ॥ ३ ॥

फाग चौक मे आई बिराजीं ।

नयनन सयन चलावैं ॥ ४ ॥

श्रीप्रेमलता स्वामिनि की ओरी ।

विजय निसान बजावैं ॥ ५ ॥

❀ पद ९ ❀

सिया जू खेलने आई प्रिया सो आज रंग होरी ।

सजे नव सप्त अरु द्वादस भरी अति चाह हिय सोरी ॥

अली गण संग बहु सोहैं लिये चहुँ ओर रंग घोरी ।

लाल के ओर हसि हेरैं सयन सो लेहि चितचोरी ॥

बजै वर बाजने गावैं रंगीली प्रेम सो गोरी ॥ २ ॥

❀ पद १० ❀

पिय लसत कपोल गुलाल लाल ॥

बीर सिंगार परस्पर दोऊ ।

हरषि मिलत मनो चतुर चाल ॥१॥

फूलि रहेउ नव सोन कंज ।

अकि मनसिज रूपी सुभग ताल ॥२॥

भौहैं भँवर मीन तहां कुण्डल ।

श्रवन सीप सम अति रसाल ॥३॥

अलकैं लटक रही मुख ऊपर ।

पियत सुधा ससि फनिक बाल ॥४॥

नासामणि की हलनि अधर पर ।

मन्द हांस मानो पास जाल ॥५॥

श्रीप्रेममोद कैसे कोउ बचिहैं ।

घायल बिनु छवि परत ख्याल ॥६॥

❀ पद ११ ❀

खेलत आज रसिक दोउ होरी ॥

सरयू तीर बसन्त चौक में नवल बितान तनोरी ।

सिंहासन दुहुं ओर मनोहर नीचे फरस विछोरी ॥

सौज सब साजि धरोरी ॥ १ ॥

बन प्रमोद फूल्यो चहुं ओरी भँवर गूँज सरसोरी ।

चातक कोकिल कीर चकारैं कूजत मोर नटोरी ॥

निरषि हिय मदन बढोरी ॥ २ ॥

जनकलली रघुलाल नवल वय संग लिये बहु गोरी ।

बाजत साज राग धुनि छाई फूलन मार परोरी ॥

लपटि मुख रंग मलोरी ॥ ३ ॥

श्रीप्रेम मोद रस केलि फाग मे लषि दृग हीय भोरी ।

ततसुष स्वाद अनूप कहै को सहज स्वरूप लषोरी ॥

और सवसो मुष मोरा ॥ ४ ॥

❀ पद १२ ❀

रंग डारो न रसिया बर जोरी ॥

अति सुन्दरि सुकुमारि नवलवय ।

भोरी जनक किशोरी ॥ १ ॥

करि विनती सखियाँ लै आई ।

तुम्हसों खेलन होरी ॥ २ ॥

सारी भीन रंगीन स्यामली ।

तडित ओप अंग छोरी ॥ ३ ॥

चन्द मन्द परिजात वदन लषि ।

अनुपम छबि रस बोरी ॥ ४ ॥

बड़े भाग अस दुलहिन पायो ।

लीजै रसहि निहोरी ॥ ५ ॥

श्रीप्रेममोद पिय निज कपोल पर मलन देउ सिय रोरी ॥ ६ ॥

❀ पद १३ ❀

मंडप तर आजु मचीं होरी ।
 उत अवधेश इतै मिथलापति उमगत आनन्द हिय सोरी । १ ।
 उत वरिआती इत सरियाती अवरि गुलाल भरै भोरी । २ ।
 कुंअरि कुंअर चहुँ हिलि मिलि खेलत श्यामल गौर बनी जौरी
 कूम कुम फूल मारि पिचकारिनि रंग को सगित बहायोरी । ४ ।
 खंभन मे प्रति बिम्ब सुपरहीं अनुपम छवि बरनै कोरी । ५ ।
 बाजन गान महा धुनि छाई प्रेम मोद सुख लूटोरी ॥ ६ ॥

❀ पद १४ ❀

मैतो जैहों न आलि खेलन होरी ॥
 सरजू तीर अवध की गलियन, रंग वर्षत चहुँ ओरी ॥ १ ॥
 नृप सुत अनुज सखा संग लीन्हे, विदुषक भाँड करोरी ॥ २ ॥
 कर कमलनि पिचकालिये रँग भरि अवरि गुलाल भरे भोरी
 नवल किशोर मार मद माते लाज मर्यादा छोरी ॥ ४ ॥
 फागुन के मिस घात तकत नित खोजत नवल किशोरी । ५ ।
 पुरुषन को पुरुषत्व रहत नहि लंपट रस में बोरी ॥ ६ ॥
 पति वर्तन को धर्म बचत नहि निरषिहांही छाबि भोरी ॥ ७ ॥
 श्रीप्रेम मोद एक मास रहौ घर निकसौंगी नहि पौरी ॥ ८ ॥

❀ पद १५ ❀

सिय प्रीतम आलि नई होरी ॥

जब देखो तब रंग बरसावत ।

सरजू तीर अवध पोरी ॥ १ ॥

नर नारी चर अचर विमोहत ।

निरषत स्याम गौर जोरी ॥ २ ॥

कोटिन सखा सखी दुहुँ ओरी ।

गान नृत्य बरनै कोरी ॥ ३ ॥

द्वादस मास छबो रितु निसि दिन ।

श्रीप्रेम मोद उमगोरी ॥ ४ ॥

❀ पद १६ ❀

सिय स्वामिनि मानसु ठानी ।

पिय पिचका मारेउ तानी ॥

तन नवल सु अति सुकुमारी

रस माते हिय न विचारी ॥

छिपि सधन कुंज मधि जाई ।

तहँ कोऊ जान न पाई ॥

रस रंग भंग भयो भारी ।

अलि कहहु उपाय विचारी ॥

चलो आपु लाल ललि पासा ।
परि चरन कहहु हम दासा ॥
अब चूक माफ सब कीजै ।
जो उचित दण्ड सो दीजै ॥
सुनि बचन स्याम मन भाये ।
सिय पास चले चित चाये ॥
मिलि प्रेम मोद उमगाये ।
रस जंग सु फाग मचाये ॥

* पद १७ *

पिय गाल गुलाल मसलि दैहौं ॥
सजग होहु प्रीतम रघुनन्दन, तुमहिं जीति फगुवा लैहौं ।
भारि बनाय नचैहौं सब मिलि, ताल बजाय राग गैहौं ॥
सावन को बदलो लै फागुन, सिय स्वामिनि ढिग लै जैहौं ।
पाँय पराय भिजाय राज रस, श्रीप्रेममोद अति सुष पैहौं ॥

* पद १८ *

रंग होरी में छयला पकरि गये ॥
कोटिन नारि चहुँ दिसि घेरे ।
कलवल बरबस हारि गये । १ ॥
नवसत द्वादस साजि ललन अङ्ग ।
बहु विधि निरतन गान ठये ॥२॥

मन भावत फगुआ लै अलिगण ।

सीय की जीत मनाय लये ॥ ३ ॥

हाहा खवाय भिजाय सुरंगन ।

बदन चूमि रस रंग छये ॥ ४ ॥

श्रीप्रेममोद फागुन सुख लूटत ।

गावत अनुपम राग नये ॥ ५ ॥

❀ पद १६ ❀

चलो खेलै वसन्त वसन्त कूँज ।

कोमल धुनि डारिनि भँवर गूँज ॥

नवल फाग खेलै सिय प्रीतम ।

रति मन्मथ मानो अलिन पूँज ॥

मंगल भेट सीय रघुवर को ।

अलि प्रेमलता मन निरषि लूँज ॥

❀ पद २० ❀

नवल सखि खेलै फाग सजाई ॥

माव वसंत पंचमी मंजुल गावहि गग सुहाई ॥ १ ॥

केशरि रंग परस्पर छिरकै, पिय प्यारी मनभाई ॥ २ ॥

अति अनुराग भरे मन दम्पति देह दसा विसराई ॥ ३ ॥

श्रीप्रेमलता यहि छवि के ऊपर तन मन धन नेवछाई ॥ ४ ॥

❀ पद २१ ❀

सखि आयो रितु सु बसंत आज ।

हिय उमगि उठेउ रसराज साज ॥

पिय मिलन हेतु अनुराग जाग ।

सब बिसरि गयो तन लाज काज ॥

अलि रंगमहल को चलत भई ।

सजि मंगल गावति साज बाज ॥

लषि प्रेमलता छबि भई सनाथ ।

करि भेंट जुहारति अलि समाज ॥

❀ पद २२ ❀

सखि देखो बसंत रसाल कूज ।

दोउ राजत प्रीतम प्यारि संग ॥

छबि छाँय रही चहुँ ओर पूँज ।

लषि लाजत कांठिन रति अनंग ॥

पिक बोल मनोहर भँवर गूँज ।

बन उपवन फूले नव उमंग ॥

अलि नटहि गान करि सरस मंजु ।

धुनि छाँय रही बाजहि मृदंग ॥

लषि प्रेमलता सियकर सुकंज ।

गहि लगे उड़ावन पिय सुरंग ॥

❀ पद २३ ❀

रंग होरी में प्रीतम प्यारी बने ॥

सजि नव सप्त सिंगार मनोहर ।

द्वादस भूषण अंग ठने ॥ १ ॥

सारी चटक रंगीन सोहावनि ।

अंगिया के बन्द नाहिं तने ॥ २ ॥

बेशरि हलनि मन्द मुसुकावनि ।

तिरछी चितवनि हरति मने ॥ ३ ॥

भूमकि भूमि भुकि चलनि सोहावनि ।

मन्मथ गज लषि लाज घने ॥ ४ ॥

श्रीप्रेमलता छवि निरषहिं आली ।

हरषित विजय निसान हने ॥ ५ ॥

❀ पद २४ ❀

रंग होरी में छयला पकरि गये ॥

घेरि अली गण रंग लगावहि, श्याम अंग अति रंग छये ।

गाल गुलाल मसलि मुष चूमै, मन भावत आनन्द भये ॥

अलि कहैं लाल कहौ हम हारे, प्यारी के गुण गावो नये ।

हाहा खवाय नाचि गुण गाये, श्रीप्रेमलता तव छोरि दये ॥

* पद २५ *

होरी मे आजु पिया को पकरि लै आई ॥
 चहुँ दिसि घेरि खड़ी सब अलि गण मध्य किये रघुराई ।
 कहैं लाल अब हारि बोलिये सिय की जीत मनाई ॥
 चूक सब माफ कराई ॥ १ ॥
 नवल सिंगार किये रघुवर को तिय को वेष बनाई ।
 ताल बजाइ नचावैं गावैं करै सबै मन भाई ॥
 कहौं का आनन्द गाई ॥ २ ॥
 सोइ कियो तब रसिक लाड़िले जो सबके मन भाई ।
 पद परसत सिय कंठ लगायो लीन्ही सँग बैठाई ॥
 वेष यक प्रेम समाई ॥ ३ ॥

* पद २६ *

होरी खेलैं रसिक दोउ आज अलिनि संग हरिषि हिया ॥
 कनकभवन मधि रास मण्डल में ।
 सन्मुख सोभित सीय पीया ॥ १ ॥
 सिय दिसि सखी सखा पिय ओरी ।
 जनु रति पति बहु रूप किया ॥ २ ॥
 बाजत बीण मृदंग मँजीरा ।
 गान करत बहु नवल तिया ॥ ३ ॥

फूल मारि पुनि रंग उड़ावति ।

सोधि विभाग लिये छड़िया ॥४॥

श्रीप्रेमलता छवि लपै रसिक जिन्ह ।

श्रीअग्र स्वामि अवलम्ब लिया ॥५॥

❀ पद २७ ❀

रास मण्डल में आजु रसिक दोउ फाग मचाई ॥

रघुनन्दन श्री जनक नन्दिनी संग सखी समुदाई ।

नवल सिंगार किये नष शिषलौ वय किशोर बनि आई ॥

दुहूँ दिसि गोल बनाई ॥ १ ॥

पिय दिसि सखी सखावनि सोहैं सिय दिसि सखी सोहाई ।

बाजत बीण मृदंग भांभ डफ नृतत भाव देखाई ॥

गान की धुनि नभ छाई ॥ २ ॥

चन्दन चूर कपूर कुमकुमा अवरख फूल चलाई ।

होली कहि धरि लेहि परस्पर अँग न रंग लगाई ॥

हसैं सब ताल बजाई ॥ ३ ॥

मदन मनोरथ दुहुं दिसि उमगे लाज मर्याद भगाई ।

अमित रूप धरि रास बिहारी पिचकन रंग बरषाई ॥

मरम यह काहुं न पाई ॥ ४ ॥

श्रीप्रेमलता यह फाग अनोखी निगम अगम कहि गाई ।
सतगुरु कृपा होइ तब पावै महल वसै सो जाई ॥
रास रस सिंधु समाई ॥ ५ ॥

❀ पद २८ ❀

अब जावो न प्रीतम आजु, कालि रंग डारि दई ॥
छल कीन्हो पिय श्याम शलोने ।
सिय स्वामिनि सो जानि लई ॥
चलि प्यारी पद सीस नवावो ।
छमा हांइ जो चूक भई ॥
कल बल छल एको नहि चलि हैं ।
अबहि बनावों नारि नई ॥
अस कहि चन्द्रकला रघुवर को ।
लै प्यारी के पास गई ॥
चरण पर पिय कंठ लगायो ।
श्रीप्रेमलता मन मोद छई ॥

❀ पद २९ ❀

रंग डारो मोपै रघुराज लला ॥
हौं मुग्धा सुकुमारि लाड़िले नहि जानौं कछु खेल कला ॥१॥

औरनि के संग शरि मचावो ।

जिन तब गाल गुलाल मला ॥ २ ॥

सिय प्यारी को हौं लघु भगनी,

अनय किये से नाहि भला ॥ ३ ॥

श्रीप्रेमलता की सुनि पिय बतियाँ ।

सकुचि हँसे नहि जोर चला ॥ ४ ॥

❀ पद ३० ❀

नई दुलही होरी खेलन आई ॥

लषि पिय के मन मोद बढेउ अति ।

नयनन सयन चलाई ॥

लाज भरी घुंघुट नहीं खोलत ।

रस बस हिय उमगाई ॥ १ ॥

प्रथम समागम भयेउ दुहुँन को ।

रस मय फाग मचाई ॥

श्रीप्रेमलता लषि फाग अनूपम ।

बहुरति काम लजाई ॥ २ ॥

❀ पद ३१ ❀

सजन संग खेलिये फाग सहेली ॥

लैकर रंग लगाय कपोलन, अरस परस भुजमेली ॥ १ ॥

वाजत वीण मृदंग भांभ डफ, गावति राग नवेली ॥ २ ॥

सुनि सषि वचन प्रिया मन भाये, दरसाई रसकेली ॥३॥
श्रीप्रेमलता प्यारी बस प्रीतम, बरसाई रंग रेली ॥४॥

❀ पद ३२ ❀

मारो गुइयाँ सुरंग पिचकारो ॥
अवध छयल बरजो नहि मानै, भेइ दई रस गारी ॥१॥
मैं उनसे कछु बोली नाहीं, हँसि चितवन मो पै डारी ॥२॥
धूँधट खोलि गुलाल लगायो, करि मोसो बलभारी ॥३॥
रससानी नवला की वाणी, सुनि बिहँसी अलि सारी ॥४॥
श्रीप्रेमलतहि करि अभय सियाजू, बरजेउ अवध बिहारी ॥५॥

❀ पद ३३ ❀

नवल सैयाँ चलो फाग खेलाऊँ ॥
प्यारी को प्रीतम करि रसिया, तुमको नारि बनाऊँ ॥१॥
डरहु नहीं फागुन में प्यारे, सिय जू से अभय कराऊँ ॥२॥
नाचहु गाय प्रिया गुण सुन्दर, सब सषि साज बजाऊँ ॥३॥
श्रीप्रेमलता प्यारी बस प्रीतम, अति सै मौज देवाऊँ ॥४॥

❀ पद ३४ ❀

अवधपुरी रघुबीर आज रंग होरी मचाई ॥
भरत लपन स्फुदवन सखन संग रघुवंसी समुदाई ।
केशरि नीर भरे पिचकारिन रंग बरसा बरसाई ॥
गलिन में धार बहाई ॥ १ ॥

बीण मृदंग ढोल डफ भालर संख भेरि सहनाई ।

बाजत साज राग धुनि छाई बंसी बेणु मिलाई ॥

रहेउ अति आनन्द छाई ॥ २ ॥

नगर बजार चौक प्रति कुजनि घूमत स्वांग बनाई ।

महल महल में जाइ सवनि के गावत गारि सुहाई ॥

लाज को दूरि भगाई ॥ ३ ॥

श्रीप्रेमलता सिय सहित महल ते निरषत अति सुष पाई ।

खेलि नहाइ दान बहु दीन्हो सरयूतट रघुराई ॥

सुमन झरि देवन लाई ॥ ४ ॥

❀ पद ३५ ❀

दोउ खेलैं वसंत सिय स्याम संग ॥

राजत रतन सिंहासन दम्पति ।

नव वसन विभूषण सजि सु अंग ॥

छत्र चँवर वर व्यजन सु लीन्हे ।

संग भरत लषण रिपुकरण भंग ॥

सखा सुकंठ विभीषण आदिक ।

लिये धनुष ढाल अरु असि निषंग ॥

नटत सुसंकर नारद हनुमत ।

करि गान सुरागिनि नव सुधंग ॥

ब्रह्मा वसिष्ठ परासर वज्रवत ।

सजि नवल पखाउज वीण मुर्चंग ॥

व्यास सुसुक आचार्य पुरुषोत्तम ।

लिये पान अतर अरु केशरि रंग ॥

गंगाधर आचार्य सदा श्री ।

लिये छड़ी गेन्द दुहुँ दिसि उमंग ।

रामेश्वर श्री द्वारा नन्दा ।

लिये माल सुभग जुगमन उरभंग ॥

देवानन्द श्री स्थामानन्दा ।

लिये चन्दमुखी नवकल पतंग ॥

श्रुतानन्द श्री चिदानन्दजी ।

लिये मेवा फल बहु भरि उछंग ॥

श्रीपूरण आनन्द श्रियानन्द लिये ।

वसन विभूषण दोउ अलंग ॥

हरियानन्द श्रीराघवानन्दा ।

लिये ध्वजा लषै युग रंग जंग ॥

श्रीरामानन्द मंत्र बंसावलि ।

अति सुषद नसावनि जगत दंग ॥

श्रीप्रेमलता यह फाग वसन्ती ।

बहु वारि विलोकति रति अनंग ॥

❀ पद ३६ ❀

रंग होरी खेलै श्रीरामानन्द ॥

बैठे सुभग सिंहासन सोहैं ।

चहुँ ओर विराजत संत वृन्द ॥

छत्र अनन्ता नन्द फिरावैं ।

जेहि देखत उडुगण लजत चन्द ॥

सुखानन्द श्रीसुर सुरानन्दा ।

करै चँवर दूहैं दिसि मन्द मन्द ॥

हरियानन्द श्री पीपा दोऊ ।

लिये अतर पान सेवहि प्रसन्द ॥

श्रीकबीर श्रीभावानन्द ।

लिये साज बजावैं सुरस कन्द ॥

श्रीसैना श्रीधना सु तिन्ह संग ।

लिये साज येउ चहुँ बिधी के बन्द ॥

श्रीरैदास गालवानन्द लिये ।

रंग उड़ावैं सुषद द्वन्द ॥

पद्मावती संग बहु आली ।

करैं गान प्रेम युत विविध छन्द ॥



❀ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❀

❀ परिशिष्ट भाग में प्रबन्ध ❀

❀ कवित्त ❀

नवल प्रमोदधन कनकभवन विच फूलो हैं वसन्त
अति सोभा सरसातु हैं । कनकभवन वायु कोन हीं में
फागु कुंज अलिन समेत सिय पिय तहं जातु हैं ॥ होरी
को उल्लाह करैं नवल सुरँग भरि द्वंद को मचावैं हरैं काम
पीर गातु हैं । प्रेम सो बखानि कहौं सुनो! मन लाय
सखी रंग को पसार मेरे हिये न समातु हैं ॥ १ ॥

❀ चौपाई ❀

नवल वसंती कुंज अनूपा । चहुं दिशि वृक्ष लता रस रूपा
तेहिचारोदिशिकोटसोहावन । नवरंग मनि चित्राम सुअनगन
उच्चविसाल मनोहर राजै । सिध पौरि चहुं अलिन समाजै
ताके मध्य विसाल वेदिका । हाटक मनिमय चित्र रेषिका
तेहि वेदी पर कुंज अपारी । रमन चमन चहुं ओर संवारी
भँवर चकोर कोकिलाआदिक । रसफलखाय सराहैं स्वादिक
गुंजै कूजै रस मय वानी । लता वृक्ष लपटी रस दानी
अतर गुलाब फुहारे चलहीं । त्रिविधि पवन सौरभ लै हलहीं

❀ सोरठा ❀

रितु बसंत सरसाय, भूमिलता द्रुम कुञ्ज खग ।
 कुण्ड तड़ाग वनाय, मनि सोपान सुहाहि मग ॥
 प्रेमलतहि दरसाय, कृपा लड़ैती लाल की ।
 होरी साज सोहाय, केसरि रंगहि सान की । २॥

❀ चौपाई ❀

यहिविधिचारोदिसिलखि लीजे । वेदी जाय नवल सुख कीजे
 ललित विसाल चाँदनी तानी । मुक्ता बंदन वार सुहानी
 फरस विचित्र विछाई नीचे । विविध सुगंधन सो समसीचे
 खंभ दंभ हर चहुँ दिशि नीके । मेंहराफैं भावैं अति जीके
 तातर युगल सिंहासन मनिको । सहस कमल दलचतुरखंडको
 एक पूरव एक पश्चिम सोहै । सांभा हेतु विलग किये सोहै
 पीत रंग के बिछे गलैचे । सुमनन की रचना विचवीचे
 दुहुँ दिशि कवच धरे ता ऊपर । पीत रंग तकिया अतिसुन्दर
 तेहि ऊपर ललि लाल विराजै । कोटिनरतिमनमथलखिलाजै
 पीत सिंगार किये दोउ प्यारे । निरखत मनमें मोद अपारे

❀ दोहा ❀

नवल लड़ैती लाल छवि निरखत मन न सभाय ।
 प्रेमलता कैसे कहै कृपा विवस कछु गाय ॥

❀ कवित्त ❀

सुभग लड़ैती जू के चरण कमल बीच जावक की
 छवि मोह सोभा सो अपार है । नूपुर ललित धुनि होत
 है रसाल मानो लाल मन मोहन को हंस कलमार हैं ॥
 पीतरँग सारी तामें हरित किनारी बूटी लाल स्याम नैन
 मीन फांसवे को जार है । कटि किंकिनी ललित अति
 कंचुकी सोहाई बाहु में भूषन नव गले सोहैं द्वार हैं ॥१॥
 नाशामनि नथ दृग अंजन नवल छवि तिलक सु भाल
 फूल भुमका सुधार हैं । सीस फूल चन्द्रिका की जाति
 सुठि मोतिनि सो मांग चोटी रचि पिय रूपहि को सार है ॥
 रँग को तरंग अति चित्र उठै छन छन सोभा सु अनूप
 कहि पावै को अपार है । सिया जू की छवि देखि पिय
 की बखानो प्रेम बढ़त उमंग हिये रखा न संभार है ॥२॥

❀ कवित्त ❀

प्रीतम के सिर पीत पाग तामे मोतिन के भङ्गे हीरा
 कलंगी नवल रँग लाल हैं । अलक कपोल छुटी अतर
 सो बारी कारी कुण्डल नवल कल तिलक सुभाल हैं ॥
 पीत रंग चदरा नवल कांधे मोतिन के जाल दुहुँ छोर
 कटि धोती छवि जाल है । चरण कमल कडे कनक कलित
 छवि जावक निहारि प्रेम करत निहाल है ॥१॥

❀ दोहा ❀

देखि युगल छवि नवल सब, प्रेम उमंगि अलिनयन ।

होरी रंग उन्नाह भरि, देन लगी सब सयन ॥

इति श्रीहरिशरनदासानु दास विदेहजाशरन कृत कुञ्ज
रूपक युगल सिंगार वर्णनों नाम प्रथमो विनोद ॥१॥

❀ चौपाई ❀

पूरब दिसि सिय प्यारी राजैं । पच्छिम नवल लाल छवि छाजैं
आधो सखी सखा वनि सोहैं । दम्पति रंग रगी मन मांहैं
सियदिशिसखीसखापियआंगी । नवल सिंगार किये सब गोरी
दुहुँ दिशिछत्र चँवर की सोभा । कहत न बनै देखि मन लोभा
अबरख रंग गुलाब की रासी । देखिदेखि मोहि लागत हांसी
चंदन चूर के रासि कपूरा । केसरि चूर फुलन के धूरा
केसरि रंगन कुण्ड भराई । अतरन की बहु नालि बनाई
गेंदा कमल गुलाब चमेली । दुहुँ दिसि रासिकियेअलबेली

❀ दोहा ❀

होरी सौज अपार है, वरनि कहै मति कौनि ।

पिय प्यारी की छवि निरखि, थकित रही गति मौनि । १॥

धूप दीप नैवेद करि, अतर पान दै माल ।
 दुहुँ दिसि आरति साजि कै, करन लगी नव बाल ॥२॥
 बीन मुर्चंग सितार धुनि, भाँझ मृदंग बजाय ।
 नृत गान करि प्रेम सो, युगल सु छवि उरलाय ॥३॥
 दुहुँ दिसि उमंग बढ़ाय कै गावत हैं अलि फाग ।
 दम्पति के मन मोद अति, मदन मनोरथ जाग ॥४॥

❀ पद ❀

खेलि रहे दोउ फागरी सजि रंग रंगीले ॥
 सनमुख चितै भरे अनुरागैं, नैन सैन चमकीले ॥१॥
 सखी सखा दुहुँ और हजारन, फूल गुलाब छड़ीले ॥२॥
 प्रेमलता रस उमग बढ़ावति, गान करै चटकीले ॥३॥

❀ दोहा ❀

एक सखी सिय बालि कै, पठयो प्रीतम पासु ।
 हाल कह्यौ समुझाय कै, सजग होउ पिय आसु ॥१॥
 सिय पद कमल प्रनाम करि, सान भरीसो बाल ।
 प्रीतम छवो निहारि कै, गान कियो दै ताल ॥२॥

❀ पद ❀

नवल सैया सुनि लीजै हमारी ।
 प्यारी की हम नवल दृष्टिका सजग होउ धनु धारी ॥१॥

नीति विचार करौ रघुनन्दन मति दीजे हमै गारी ॥२॥

प्रेममोद रँग भरि पिचकारी डारि दई खेलवारी ॥ ३ ॥

❀ पद ❀

फुल गेंदा न मारो नवल रसिया ॥

अंग लगत मन मदन मनोरथ जोवन जोर कसी अंगिया ॥१॥

सनमुख खड़ी भरी तन लाजन चहुँदिशि देखि हंसै सखियाँ ॥२॥

फागुन में रस लेहु रसीले रहौ सदा पिय तिय बसिया ॥३॥

प्रेमलता तन सुधि कछु नाहीं पिय मुख निरखि जकी अखिया ॥४॥

❀ पद ❀

पिचकारी न मारो नई अंगिया ॥

फागुन फाग खेलि सिय संग में, सदा रहो पियरस पगिया ॥१॥

नव जोवन रस छकौ रसीले, मदन मनोरथ हिये जगिया ॥२॥

तुम हो नये नई नव नागरि, कुज रसाल नई बगिया ॥३॥

प्रेमलता मन मंजु मनोरथ, युगल फाग लखि दृग रंगिया ॥४॥

❀ दोहा ❀

अलि बाली अनखायकै, सुनों छैल रघुवीर ।

हाहा तुमहि खवाइहौ, धरो हिये बिच धीर ॥१॥

हों नवला सुकुमारि पिय, अनय कियो बरजोरि ।
 नवउरोज रंग मारि कै, आप हँमों मुख मोरि ॥२॥
 लाल कह्यो मुसुकाय कै, अनय नहीं यह नीति ।
 फागुन में मरजाद कहूँ, तुमहुँ करो रम रीति ॥३॥
 अली चली पगचारि कै, सजग होउ रघुलाल ।
 लाल वोलि कहि सखन सो, चलो सैन सजि हाल ॥४॥
 रँग भीजी अलि आयकै स्वामिनि पद सिरनाय ।
 हाल कह्यो रघुलाल कै, अपने अङ्ग देखाय ॥५॥

❀ पद ❀

फुलन की छड़िया मारी दैया ॥
 अवध छैल रसिया रघुनन्दन, वांह गहेउ वरियैया ॥१॥
 घूँघट खोलि गुलाल लगायो, अंगन रस वरिसैया ॥२॥
 लाजन भरी कहेउ नहि मानै, मंद मधुर मुसकैया ॥३॥
 प्रेमलता श्रीजनक नंदिनी, जानेंउ खेल खेलैया ॥४॥

❀ चौपाई ❀

तव सिय चन्द्रकला तन हेरी । जूथेस्वरि सनमुख भइनेरी
 स्वामिनि कहेउ जायपियजीतो । सैन साजिरँग मारि भलीतो
 यह सुनि अग्र अली करजोरी । स्वामिनि आसपुरावो मोरी

मन अभिलाख बहुत है भारी । अज्ञा पाउं करौं तैयारी
स्वामिनी चन्द्रकला मुसकाई । कहेउ जाहु अलि सयनसजाई
येहि विधिवात करत इतआली । उतते सखा पठायोख्याली
मदन मनी निज नामसुनायो । सियस्वामिनिपदसीसनवायो

❀ दोहा ❀

हाल कहेउ सब लाल कै, चलो सयन सजि हाल ।
अग्र अली सिरनाय कै, संग लिए बहु वाल ॥१॥
दिव्य नवल रथ साजि कै, चली अली समुदाय ।
होरी चाह बढाय कै, बाजन नवल वजाय ॥२॥
मदन मनी कौ पकरि कै, सखी सरूप बनाय ।
मन भायो रंग बोरि कै, प्रीतम पास पठाय ॥३॥

इति श्री हरिशरनदासनुदास विदेहजा शरन कृत होरी सोज
युगल संवाद वर्णनो नाम दुतियो विनोदः ॥२॥

❀ मनोरम छन्द ❀

उत पहुंचे रूप बनाये । पिय निरखि चीन्हि नहिपाये ॥
तव मदन मनी हंसि बोले । हम सखा रावरे होले ॥
यह हाल हमारि कराई । अव पठवहु सयन सजाई ॥
तव प्रीतम लीन्ह बोलाई । एक सखा सुजान सोदाई ॥

हैरसिक मनी तेहि नामा । जेहि लखि लाजहि बहु कामा ॥
 रथ साजि चल्पो हरखाई । सजि सयन समूह सोहाई ॥
 इत अली चली रस माती । नव भूषन धुनि सरसाती ॥
 दुहुँ ओर खड़े चित चाये । बहुँ सखी सखा उमताये ॥
 जै सब्द करें दुहुँ ओरी । जै नवल किशोर किशोरी ॥
 सब सुमनन चोट चलावैं । बहु रंग गुलाल उड़ावैं ॥
 नभ रँग गुलालन छाई । सब लालै लाल देखाई ।
 बहु सखी सखा गहि लीन्ही । नव अंगन रंग भरि दीन्ही ॥
 एक सखा सखी गहि लीन्ही । लै कुंडन डारि सो दीन्ही ॥
 रंग भीजि गई बहु आली । सब सखा बजावैं ताली ॥
 बहु गानतान सर साहीं । बहु नृत करें हरखाहीं ॥
 अलि कुमकुम चोट चलावैं । उत फौजें मारि भगावैं ॥
 उत पिचकन रंग चलावैं । सब अलियन मारि भगावैं ॥
 बहु ताल मृदंग बजावैं । बहु रंग सुमन बरसावैं ॥
 बहु होड़ाहोरी बोलैं । बहु वसन होन तन डोलैं ॥
 बहु स्वाँग अनेकन लावैं । बहुहास बिलास बढ़ावैं ॥
 कांऊ संकर रूप बनाई । चढि बसहा डमरु बजाई ॥
 बहु गन के रूप बनाई । संग वं बं बोलैं धाई ॥
 बहु अट पट बानी बोलैं । खर स्वान चढ़े बहु डोलैं ॥

सब नाचै परम तरंगी । बहु साज बजावै भृंगी ॥
 सिव देखि हँसे ठढ़ाई । गन गान तान मन भाई ॥
 कोउ काली वनि कै आई । सँग जोगिनि बहु लै आई ॥
 सब अटपट साज बनाई । जेहि देखत लगै हँसाई ॥
 बहु तान तरंग बढाई । सब नाचै ताल बजाई ॥
 बहु उलटी हूँ कै नाचै । बहु बेख अनेकन साचै ॥
 सिव सनमुख काली आई । दोउ रंग की रारि मचाई ॥
 इत काली जोगनि खेलै । उत संकर गन रंग मेलै ॥
 बहु जोगिन गनसे लपटै । दोउ काली संकर भपटै ॥
 रँग धूम मचाई भारी । सब गावहि अटपट गारी ॥
 येहि विधि बहु स्वांग देखाई । सब लुप्त भये को गाई ॥
 इत अग्रअली रस रूपा । उत रसिक मनी बल भूपा ॥
 दोउ सनमुख सयन चलाई । बहु केसर रँग मंगाई ॥
 दोउ खेलै करख बढाई । सब देह दसा विसराई ॥
 बहु अवरख रंग उड़ाई । बहु अतरन कीच मचाई ॥
 बहु देव सुमन बरसाई । सब नयनन को फलपाई ॥

❀ दोहा ❀

रसिक मनी को पकरि कै, घेर खड़ी बहु बाल ।

अपर सखा भागे सकल, जाय कहेउ सब हाल ॥ १ ॥

❀ चौपाई ❀

लाल सखन को धीरज दीन्हा । आपौ संग।चले रंग लोन्हा
 रसिक मनी को जाय छोड़ाया । सखियनको रंग मारि भगायो
 अली भागि आई रथ पासा । लालन के मन परम हुलासा
 लाल कहेउ निज स्वामि निलावो । तव हमसे रँग विजय मनावो
 अग्र अली बोली मुसकाई । बोलत में पिय लाज न आई
 हमको प्रथम जीति जब जावो । तव प्रीतम फिर बीर कहावो

❀ दोहा ❀

येहि विधि के बहु वाद करि, मनमें करख बढाय ।
 भिरेउ युगल दिशि परसपर, केसरि रंग उढाय । १॥

❀ मनोरम छन्द ❀

बहु केसर रंग उड़ावैं । बहु डंक निसान बजावैं ॥
 दुहुं ओर विचार न लागे । बहु काम मनोरथ जागे ॥
 बहु आशव दिव्य मगाये । दुहुं ओरनि पान कराये ॥
 बहु अटपट बोलन लागे । सब लाज सिवा नहिं त्यागे ॥
 बहु कलसन रँग भरिलावैं । बहु पिचकन मारि दहावैं ॥
 सब मनसिज देव मनावैं । बहु केलि उमंग बढावैं ॥

* दोहा *

येहि विधि खेल बढाय कै, मन अभिलाखा जान ।
रस हेतु बहु रूप को, धरि लीन्हैउ भगवान ॥१॥

* चौपाई *

प्रति प्रतिसाखिनिस्यामकरूपा । रस पीवहिअलि अङ्ग अनूपा
चहुँदिसि बने मनिन बहु कुजै । सुखमय सेज विछाई पुँजै ॥
तहुँ रसरंगन होरी खेलहि । निज अङ्गन से अङ्ग मेलहि
प्रीतम अङ्ग नवल पिचकारी । अलियन के अंग डारि सवारी
कोउ पियगालगुलाललगावै । प्रीतम भुज भरि अंक लगावै
कोउ अधरामृत पान करावै । कोउ अलि कंचुकिबंद खोलावै

* दोहा *

येहि विधि की बहु केलि करि, एक रूप भये स्याम ।
सरमन कोऊ जान कह्यु, सबके पूरे काम ॥ २ ॥

* चौपाई *

दुहुँदिसिते पुनि सयन सँभारै । बहु सखि सखा रंगमजिमारै
श्रीअग्रअली रथवेगि चलायो । उतते लाल साजि रथआयो

दुहुँ दिसि परी रंग की मारैं । बहि बहि चली रंग की धारैं
 विमलानाम सखी गुन अगरी । पिय को पकरि भिजायो पगरी
 कहे उलाल अब जान न पावो । सिय स्वामिनि की जोत मनावो
 अपर सखी चहुँ दिसि ते घेरी । विजय निसान बजावैं भेरी
 पिय को सखा छोड़ावन धाये । बहुसखि रंगन मारि भगाये
 कोउ सखी कह हिलाल सुनिलीजे । मन भावैं तो फगुवा दीजे
 काँउ कहैं छयल को नारि बनाऊँ । ताल मृदंग बजाय नचाऊँ
 कोउ मुख चूमि गले लपटाई । श्याम कपोल गुलाल लगाई
 कोउ सखि पकरि पितांबर खोलैं । रंग लगावैं अंग अमोलैं
 विविधि भांतिके आनंद करहीं । अकथ अपार सुहिय सुख भरहीं
 अग्र अली एक सखी बोलाई । रूपलता आई सिरनाई ॥
 कहेउ जाहु सिय स्वामिनि पास । हाल सुनायो आयो आस
 रूपलता सिरनाय सिधाई । शीघ्र आय सिय पद सिरनाई

❀ दोहा ❀

हाल कहेउ रघुनाल कै, सुनि कै लली सुजान ।
 बहुत भाँति सनमानि कै, निजकर दीन्ही पान । ३॥

❀ चौपाई ❀

चन्द्रकला सन बोली प्यारी । अलि सुनु लाल बड़े छलकारी
 बेगि जाय लावो धनुधारी । छूटि गये होइ हैं भ्रम भारी ॥

सुनिसियवचनगवनअलि कीन्ही। रूपलतासँगअलिगनलीन्ही
 सिवका चढ़ि पहुँची तहँ जाई । निज समाज जहँ रही सोहाई
 चंद्रकला सब मे परधानी । जथा भाँति मिलि सब सनमानी
 चन्द्रकला श्रीअग्र सहेली । प्रीतम पास गई हँसि बोली
 सुनहु लाल जी परम सुजाना । मरम आपको प्यारी जाना
 जो कछु भई जान सो दीजे । जो हम कहहिं लाल सोई कीजे
 चलो लड़ै ती सनमुख प्यारे । मान किये श्रम होइहैं भारे
 मान सब्द सुनि बाले प्यारे । जो कछु कहौ करै हम हारे

❀ दोहा ❀

येहि विधि से बहु बात करि, नवल लाल संग लीन्ह ।

चली घेरि चहुँ ओर से, विजय दुन्दुभी दीन्ह ॥ ४ ॥

❀ चौपाई ❀

सखा वेष से सखी रही जो । पुरुष वेष तजि आय मिली जो
 सब मिलि संग चली हरखाई । बहु गावैं बहु साज बजाई
 विविधि भाँतिमग कौतुक करहीं । हांस बिलासन आनंदभरहीं
 देव वधुन संग कौतुक देखैं । सुमन बरषि निज भाग सुलेखैं
 ये देवी देवा सब आली । महल वसहिं नित कौतुक साली
 लीला में बहु रूप बनावैं । लली लाल के मन अति भावैं

बहु सखिमिलकर कीन्ह विचारा । नवललालकोकरो सिंगारा
 नारि नवीन बनाऊ पी को । दूलह नवल वेख करि सी को
 दुहुँ दिशिते लै सनमुखकीजे । फाग खेलाय नवल सुखलीजे
 चन्द्रकला श्रीचारुशीला जू । सकल कहहि यह कीन्ह भलाजू
 चन्द्रकला सिय दिसिपरधानी । चारुसिला पिय ओर महानी

❀ दोहा ❀

करि विचार येहि भांति से, नवल लाल ढिग जाय ।
 सजन लगी तिय वेख सब, लाल कहेउ मुसकाय ॥

❀ चौपाई ❀

फागुन में रस रीति सोहाई । हार जीति की कौन बढ़ाई
 हारि हमारि सदा तुम जीती । सुनहु करहु यह रस की नीति
 नारि हमहि करि पुरुष मिलावो । वेगिलड़ै ती पास सिधावो
 पुरुष वेष करि वेगि हिल्यावो । होरी में रँग धूम मचावो
 हमहि जीति तव विजयमनावो । इतनीमन अभिलाख पुरावो

❀ दोहा ❀

बचन सुनत अलि स्याम के, नवल केलि हिय भास ।
 चन्द्रकला अलिगन सहित, चली आय सिय पास ॥१॥
 चरण कमल सिर नाय कै, सिय स्वामिनि रुखपाय ।
 कहन लगी पिय हाल को, मृदु बचनन्हि समुझाय ॥२॥

❀ चौपाई ❀

कृपा आपकी जीत कराई । पिय को लाई नारि बनाई
 रमिक लाल आवत बनि नारी । आप चलै पिय रूप मंभागी
 चलहु लाल सँग खेलै होरी । जीति तेंहि रस रँगन बोरी
 प्रीतममन अभिलाखा भारी । पूरन कीजिये अबचलिप्यारी
 यहि विधि मन में चाह बढाई । सियप्यारी को चली लेवाई
 चन्द्रकला विमला दे सहेली । रंग रंगीली सब अलबेली
 गावै फाग साज सब बाजै । जनक लली के चहुँदिशिराजै
 नख सिख लौ नव सात संवारे । छत्र चवर व्यजनादिकधारे
 यहि विधि सकल समाज बनाई । इतसे चली महाछवि छाई
 उत से आय रहे रघुलाला । चहुँ दिशिते घेरे अलिमाला
 चारुसिला सुभगादिकआली । नवल सिंगार कियेछविसाली
 छत्र चँवर आदिक लिये राजै । गावत चली साज सबबाजै
 उतसे प्रीतम इतसे प्यारी । भोगिन रंग भरे पिचकारी ।
 दुहुँदिशितेमुख चन्दनिहारी । अति अनुगग भरे पियप्यारी

❀ दोहा ❀

दुहुँ दिशि की छवि देखि कै, बहुरति काम लजान ।

नयनन सैन चलाय कै, करन लगी अलिगान ॥२१॥

इति श्रीहरिशरनदासानु दास विदेहजाशरन कृत युगल
 परिकरकी होरी खेलनो राजकिशोर की हारि श्रीराज
 किशोरी की जीत ॥ वर्णनोनां तृतीया विनोद ॥३॥

* पद *

नवल दोउ खेलैं फाग सांहाई ॥

जनकलली रघुलाल सलोने, दुहुँ दिशि अलि समुदाई ।

कुम कुम फूल परसपर मारै. अधिर गुलाल उड़ाई ॥

अतर गुलाब केसर रंग भरि कै, पिचकन अंग भिजाई ।

दुहुँ दिशि करष बढ्या अति भारी, रंग कि जंग मचाई ॥

भीने बमन भीजि तन लपटे. नवल अङ्ग छवि छाई ।

वीन मृदंग भाँफ डफ वाजहि, गावहि चाह बढाई ॥

रमा उमा ब्रह्मानी आदिक, चढ़ि विमान सद्य आई ।

सोभा देखि सुमन वरसावहि, अपने भाग मनाई ॥

प्रेमलता सिय जीत मनावति, हारि जाहि रघुराई ॥

* पद *

खेलत लाडिली लाल आजु रंग होरी ।

प्रीतम स्याम सुजान लाडिली गोरी । संग अलिन के यूथ हरित

रंग वारी ॥ सनमुख दंपति खड़े चन्द मुख हेरैं । मनहु निमे-

वारि चकोर चकोरी ॥ वाजहि डफ वीन मुर्चंग तमूरा वंसी ।

बहु भाँफ मृदंग सितार मुरलिका जोरी ॥ गान करहि कल

कंठ सुरस मयवानी । जेहि कोकिल सुनत लजाहि मुनिन्ह चित

चोरी ॥ अवधलाल की ओर कनक पिचकारी । इत जनक

लली की ओर नवल रंग भोरी ॥ अलि प्रेमलता छवि देखि
वारि तून तोरी । कहि जै जै युगल समाज किसोर किसोरी ॥

❀ पद ❀

खेलि रहे दोउ फाग नवल रस माते ॥

अरस परस चित चोरि किसोर किसोरी ।

निज नयनन सयन चलाय मधुर मुसकाते ॥
नेह उमंग बढ़ाय रहे दोउ प्यारे,

लखि मदन मनोरथ जाग नयन रसराते ॥
दुहुँ दिसि सखी अपार खड़ी रसमाती,

बहु गान तान सरसाहि वरनि नहि जाते ॥
धाय चलै रँग मारि भ्रमकि हटि जाहीं,

अंगन रस बरसाय गुलाल लगाते ॥
विष्णु शंभु ब्रह्मादि देव सह नारी,

सुमन माल बरसाय निसान बजाते ॥
प्रेमलता छवि देखि मगन सब आली,

नृतत करि गुन मान सुरँग बढ़ाते ॥

❀ दोहा ❀

पिय तिय बेख संवारि कै, पिचका बगल दवाय ।

घूँघुट बदन छिपाय कै, छल करि सिय ढिग आय ॥ १ ॥

रँग पिचकारी मारि कै, हो हो होरी गाय ।
चन्द्रकला दिशि देखि कै, भागि चले मुसकाय ॥२॥

❀ पद ❀

लाल अब जाने न पैहो छल करि अंग भिजाई ॥
सिय प्यारी पर रंग चलायौ, अवहीं देउं देखाई ।
अस कहि चन्द्रकला अलि, दौरी संग अली समुदाई ॥
कहहि छैल अब सजग हूजिये, संग सहाय बोलाई ।
हाहा खवाय पकरि मुख मसलों, छल की बानि छोड़ाई ॥
स्याम भागि निज गोल समाये, बहु सखी लीन छिपाई ।
इत से जाय घेरि सब लीन्ही, पिचकन रँग बरसाई ॥
रंगन मारि बिहाल किये सब, पिय को गोल भगाई ।
चन्द्रकला गहि रसिकलाल को सिय की जीत मनाई ॥
गाल गुलाल मसलि मुख चूमहि, रस मय अंग लपटाई ।
विजय निसान बजावहि हरखहि, प्रेमलता मन भाई ॥

❀ दोहा ❀

रंगन अंग भिजाय कै, कर से ताल बजाय ।
मन भावै सो करहि सब, हो हो होरी गाय १॥

❀ चौपाई ❀

चारुशिला पिय गोल संभारी । उतसे आय मारि पिचकारी
 देखि लाल को घेरे नागी । तुरत छोराय लोन्हि रंग मारी
 अगसपरसपर दोउ दिसि भिरहीं । हटहिनकोटिभांतिवलकरहीं
 पिचकन मारि गुलालनभरहीं । भूषनवसन खुलहिमहिपरहीं
 केस खुले मुख ऊपर सोहैं । नूपुर धुनि जड चेतन मोहैं ।
 उड़ी अवीर पवन बल पाई । देव लोक में पहुँची जाई
 रंगन की बहु धार बहाई । नालिन है सरयू में आई
 दशहुँ दिसा रंगन से छाई । सरित सरोवर भरि उमड़ाई
 येहि विधि की रंग धूममचाई । पुनि पकराय गये रघुराई

❀ दोहा ❀

चन्द्रकला रघुलाल को, गहि तिय बेष संवारि ।
 अलिगन सकल निहारि कै, तुरतहि खेल उसारि ॥१॥

❀ चौपाई ❀

चहुँदिसि घेरि चली सब वाला । सकल कहहीं सुनियेरघुलाला
 चलि प्यारी पद सीस नवावो । चूक भई सां माफ करावो
 हारि मानि कर जोरहु प्यारे । कहेउ लाडिली दास तुम्हारे

❀ दोहा ❀

पियलीला को सुमिर मन, कौतुक कीन्ह अनूप ।
 यक सखिको समुभाय कै, करि दीन्हेउ निजरूप ॥
 निज दरजे परताहि करि, कहैं करेउ अलि सोय ।
 मौजैं तुम्है देवाइहौं, मरम न पावै कोय ॥

❀ चौपाई ❀

आप तुरत निकसेउ खेलवारी । नवल तियाको वेख संवारी
 चले भमकि सँगलै अलि चारी । पूजन को बहु साज संवारी
 गान करत आयो जह प्यारी । पूजन कीन्ह विधान संवारी
 सिय पूछेउ कहु को तुम्हवाला । पदसिरनाय कहनलगिहाला
 कहौं सुनहु स्वामिनि सुखकारी । रितु वसंतकी हम प्रियनारी
 तव प्रीतमतिय वेख बनायो । रूप देखि मम पती लोभायो
 तजि दीन्हेउ हम को दुख भारी । रत्नाकोजिय विरद विचारी
 राखहु शरण दाशिलघु जानी । अस कहि परीचरण लपटानी
 सुनिप्यारी वचनन की रचना । दंगभई मुख आव न बचना
 प्यारी की प्रिये मुख्य महेली । चम्पक लता नाम सुखदेली
 नयन सयनदै मरम जनायो । नाह जानि सिय हृदय लगायो
 अति अनुराग मिले सुख साजे । दम्पति एक सिंहासन राजे
 मिलिदोउ प्यारे संग विराजैं । बहुरति कामनिरखिछविलाजैं

यहि बिधि इत की लीला गाई । उतकी सुनहु कहों समुझाई
 प्रीतम रूप वनी जो वाला । ताहि घेरि ल्यावैं अलिमाला
 येहि बिधि नाचत गावत आई । बिजय दुंदुभी दीन्हबजाई
 सिय देखेउ उत से सब आवैं । अलि एक घेरि नचावहिगावैं
 सिय बाली कमले तुम्ह जावहु । हाल सुनाय सबहि लैआवहु
 कमला लीलहि जाय छुड़ाई । सकल सभाज संग लै आई
 आयसबन्हिसियपद सिरनाथो । बैठे लगि पियअचरजआयो
 चन्द्रकला सबहो समुझाई । कौतुक निधि कृपाल प्रभुताई
 कृपा कोरसियसबहि निहारी । मिली आय सब भई सुखारी
 अति अनुराग ऊंमंगिसबहेली । युगलसिंगारकहि अलवेली

❀ दोहा ❀

रँग भीजे बिपरीति सब, भूषन वसन उतारि ।
 नख सिख लौंसिंगार नौ, अलिगन कीन्हि संवारि ॥
 पात रँग के वसन सब, हरित रँग की कोर ।
 स्याम लाल रँग बूटिया, ताकी छवि अति जोर ॥
 प्यारी के सिर चन्द्रिका, रघुवर के सिर पाग ।
 भूषन अंग अंग सोहहीं, निरखत मन अनुराग ॥
 धूप दीप नैवेद करि, जल पियाय अचवाय ।
 पान अतर दै माल बर, दीर्घा दरस देखाय ॥

आरति करि सिरनाय सब, चहुँदिसि सोभित वाल ।
 गलवाहीं दै राजहीं जनकलली रघुलाल ॥
 हंसिरस साने बचन बर, मृदु स्वर लली उचार ।
 कहहु लाल मन भावने, गयेउ गुमान तुम्हार ॥
 हम तुम्हरे बस लाड़िली, सांची कहौ सुजान ।
 तब दासिन के दास हम, मेरे कौन गुमान ॥
 प्रान नाथ के बचन सुनि, प्रिया मधुर मुसकाय ।
 गाल गुलाल लगाय के, लीन्ही हृदय लगाय ॥
 सुनि दम्पति के बचन बर, अलिगन जीवन प्रान ।
 जुगल चन्द मुख हेर कै, बलिहारी करि गान ॥

❀ पद ❀

बलिहारी अली दाँउ प्यारे की ।
 रंग रंगीले अति हीं छवीले बचन पीयूष उचारे की ।
 गाल गुलाल लगावत दाँऊअरस परस भुजधारे की ॥
 गौर श्याम मन हरन सोहाये रति मनमथ छवि हारेकी ।
 प्रेमलता तृन तोरि बिलोकति जीवन प्रान हमारे की ॥

❀ पद ❀

निखु सखी आजु बनी छवि भागी ।
 होरी खेलि सिंहासन राजैं राम रसिक सिय प्यारी ।
 अलीगन सुभग चहुँ दिशि ठाढी सेवा सौज सवांगी ॥

चन्द्रकला श्री अग्र अली जू चारु मिला सुभगारी ।
 दुहुँ दिशि चंवर लिये कर कमलनि नवसुन्दरि सुकुमारी ॥
 बिमला चन्द्रवती लिये दोऊ छत्र सु भालरिदारी ।
 युगल प्रिया श्री प्राण प्रिया जू नवल नेहलति कारी ॥
 साजि मृदंग वीन मंजीरा चहुँ अलि सुभग सितारी ।
 हेमलता श्री प्रीतिलता जू ब्यजन लिये मन हारी ॥
 मधुरलता श्री युगल बिहारिनि अतरदान कर धारी ।
 श्रीरस मोदलता रस दानी रूप गुनन उजियारी ॥
 चंपकलता सकल गुन खानी जीवन प्राण हमारी ।
 रूपलता श्री प्रेम मंजरी कर कमलन लिये भारी ॥
 प्रेम प्रभा गावति रस माती निरतति प्रेमलतारी ।

❀ दोहा ❀

येही विधि दम्पति राजहीं, रस मैं नित्य नवीन ।
 चतुर सिरोमनि धन्य तेई, जे येहि ध्यान सुलीन ॥१॥
 बसंत कुञ्ज कुंजेस्वरी, कहेउ कमल कर जोर ।
 व्यारु करि मम कुञ्ज में, सोइये जुगल किसोर ॥२॥
 सह समाज चढ़ि नवल रथ, व्यारु कुंज में जाय ।
 भोजन कीन्ह अनेक विधि, पान खाय सुख पाय ॥३॥

सयन कुंज में आय कै, सोये रस में लीन ।

वंसत कुंज की अलिन को, येहि बिधि रहि सुख दीन ॥४॥

रस होलिका सु विनोद जे, कहहि सुनहि मनलाय ।

लली लाल को फाग रस, तिन्हके हिय दरसाय ॥५॥

संमत वसु मुनि अंक ससि, फागुन नवल सु मास ।

वदि दशमो थिति वार सुभ, मंगल मंगल रास ॥६॥

इति श्रीहरिशरनदासनुदास विदेहजाशरन कृत श्रीराजकिशोरी

जू श्रीराजकिशोर जू फाग खेलनो श्रीराजकिशोरी जू

की विजय श्रीराजकिशोर जू की हारि वर्णनो नाम

चतुर्थ विनोदः समाप्तः ॥ शुभम् ॥



* श्रीमहाराज जू कृत ग्रन्थों की सूची *



- १ द्वादस रास प्रमोद
- २ श्रीयुगल विभूति प्रकाशिका
- ३ रसतत्त्व सिद्धान्त प्रकाशिका
- ४ श्रीअशोक बाटिका विलाश
- ५ श्रीप्रेमलता पदावली अष्टयाम
- ६ पंच प्रकाश रामायण
- ७ द्वादस मास उत्सव विलाश पदावली
- ८ भूलन प्रेम पदावली
- ९ मंत्रार्थ प्रकाशिका
- १० होलिका रस विनोद

प्राप्तिस्थान—

श्रीविदेहजा दूल्हहनिकुञ्ज

अणमोचनघाट, श्रीअयोध्याजी

मुद्रक—एस० पी० एस० श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी ।